VALI SE NISBAT KI BARKAT (HINDI)

निस्बत की बहारें (हिस्सा 7)

वली से निस्बत की ब-र-कत

मअ़

(आ़शिक़ाने रसूल की ईमान अफ़्रोज़ वफ़ात के 11 सच्चे वाक़िआ़त)

★ वक़्ते आख़िर अवराद की तकरार 11

★ बा'दे विसाल चेहरे पर मुस्कराहट 13

★ नज़्अ़ के वक़्त कलिमए त़य्यिबा 18

★ या अल्लाह मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे 20

★ आख़िरी कलाम कलिमा और दुरूदो सलाम 22

★ दा'वते इस्लामी को कभी न छोड़ना 24

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ**! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٤٠دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

वली से निस्बत की ब-र-कत

येह रिसाला **(वली से निस्बत की ब-र-कत)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाला को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

आख़िरी कलाम की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौत एक ऐसा दरवाज़ा है कि इस से हर एक को गुज़रना पड़ेगा। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इर्शाद है :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ
(پ ۲۱ سورۃ العنکبوت آیت۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हर जान को मौत का मज़ा चखना है।

किसी की वफ़ात तो ऐसी होती है कि लोग उस की मौत पर रश्क करते हैं और उन की नज़्अ़ के ह़ालात पढ़, सुन कर बे साख़्ता ज़बान से سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ पुकार उठते हैं। और येह तमन्ना करते हैं कि काश ! हम इस की जगह होते और इस मुबारक वफ़ात के मुस्तह़िक़ हो जाते। इस के बर ख़िलाफ़ कुछ लोग ऐसी ह़ालत पर इस दुन्या से रुख़्सत होते हैं कि सुनने देखने वाले बे साख़्ता ज़बान से اَلْاَمان وَالْحَفِیْظ पुकार उठते हैं और उस की मौत को इ़ब्रत की निगाह से देखते हैं। येह भी मा'लूम होना चाहिये कि ब वक़्ते मौत इन्सान के आख़िरी कलिमात बड़ी अहम्मिय्यत के ह़ामिल हुवा करते हैं क्यूं कि दुन्या से जाते वक़्त आदमी का आख़िरी कलाम उस के ख़यालात व ए'तिक़ादात बल्कि अ़मल व किरदार का बड़ी ह़द

तक आईना दार हुवा करता है। चुनान्चे तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे "**मक-त-बतुल मदीना**" की मत़्बूआ़ 135 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**आईनए इब्रत**" के सफ़्ह़ा 46 पर ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उ़मर बिन हुसैन जमह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى येह मुह़द्दिसे कबीर हैं और मदीनए मुनव्वरह के क़ाज़ी भी रह चुके हैं। ह़ज़रते इमाम मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का क़ौल है कि येह बहुत ही इ़बादत गुज़ार थे और एक ख़त्म रोज़ाना कुरआने मजीद का पढ़ा करते थे। इन की वफ़ात के वक़्त जो लोग ह़ाज़िर थे उन का बयान है कि नज़्ए रूह़ के वक़्त उन की ज़बान से येह आयत सुनी गई :

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ

(پ ۲۳ سورۃ الصافات آیت ٦١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : इन जैसी ने'मतों के लिये अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिये।

जैसे ही इस आयत को उन्हों ने पढ़ा फ़ौरन ही आप का त़ाइरे रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गया।

(تهذیب التهذیب جلد٦ صفحه ٣٩، مطبوعه دار الفکر بیروت)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता इस्लामी भाई शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ता'लीमात की ब-र-कत से अ़क़ाइदे सादिक़ा की पुख़्तागी, नूरे इ़ल्म से सैराबी और आ'माले सालिह़ा की बजा आ-वरी की सआ़दतों के मुस्तह़िक़ होते हैं। इन में से कुछ ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल इस दारे ना पाएदार से इस शान के साथ रुख़्सत होते हैं कि लोग अ़श अ़श कर उठते हैं। माज़ी क़रीब में रूनुमा होने वाले आ़शिक़ाने रसूल की दुन्या से **ईमान अफ़रोज़ रुख़्सती** और बा'दे दफ़्न देखी जाने वाली **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़नायतों के बहुत से सच्चे वाक़िआ़त तह़रीरन व तक़रीरन मौसूल होते रहते हैं जिन में से कमो बेश **64** वाक़िआ़त, **6** रसाइल **: निस्बत की बहारें** (ह़िस्सा 1) बनाम **''क़ब्र खुल गई''**, **निस्बत की बहारें** (ह़िस्सा 2) बनाम **''ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिसा''**, **निस्बत की बहारें** (ह़िस्सा 3) बनाम **''मुर्दा बोल उठा''**, **निस्बत की बहारें** (ह़िस्सा 4) बनाम **''मदीने का मुसाफ़िर''**, **निस्बत की बहारें** (ह़िस्सा 5) बनाम **''सलातो सलाम की आ़शिक़ा''** और **निस्बत की बहारें** (ह़िस्सा 6) बनाम **''कफ़न की सलामती''** में दा'वते इस्लामी की मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** की त़रफ़ से शाएअ़ हो चुके हैं। अब इस सिल्सिले का एक और रिसाला **निस्बत की बहारें** (ह़िस्सा 7) में मज़ीद 12 वाक़िआ़त बनाम **''वली से निस्बत की ब-र-कत''**

पेश किये जा रहे हैं, और बहुत से वाक़िआ़त अभी तरतीब के मरह़ले में हैं। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन के मुत़ा-लए़ से जहां ईमान को **मज़्बूत़ी** नसीब होगी वहीं अपने **अ़क़ाइद** के बारे में शशो पन्ज में रहने वालों को भी **सीधा रास्ता** दिखाई देगा क्यूं कि कलिमए पाक पढ़ते हुए, **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे पाक करते हुए, नेक अ़मल करते हुए इन्तिक़ाल करना और बा'दे दफ़्न क़ब्र से ख़ुश्बू का आना, किसी वजह से क़ब्र खुल गई तो कफ़न सलामत मिलना, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के अ़क़ाइद के सह़ीह़ होने की मज़्बूत़ दलील है।

अल्लाह तआ़ला हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

15 **रबीउ़ल ग़ौस** सि. 1431 हि. **1** एप्रिल सि. **2010** ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी"** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **उबय्यिब्नि का'ब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : (दीगर अवरादो वज़ाइफ़ के बजाए) मैं अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा। तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी और तुम्हारे गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगा।"

(جامع الترمذی ج٤ ص٢٠٧ حدیث ٢٤٦٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿1﴾ वली से निस्बत की ब-र-कत

बिलाल नगर (ज़िल्अ़ नन्काना, पंजाब) में मुक़ीम एक इस्लामी बहन के इरसाल कर्दा मक्तूब का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : हमारे घर के कुल 9 अफ़राद थे, दादाजान के इ़लावा बाक़ी तमाम अफ़राद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद थे। जब हमारे दादाजान ने अपने बच्चों पर दा'वते इस्लामी का चढ़ता हुवा म-दनी रंग मुला-ह़ज़ा फ़रमाया तो वोह ख़ुद भी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो गए। मुरीद होने की ब-र-कत से उन की ज़िन्दगी यक्सर बदल कर रह गई। दाढ़ी तो पहले से ही थी अब तो इ़मामा भी सज गया बल्कि वसिय्यत भी की, कि मेरे मरने के बा'द भी मुझे बा इ़मामा दफ़्नाया जाए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दामने करम से वाबस्तगी ने उन की ज़िन्दगी में म-दनी रंग भर दिया वोह फ़राइज़ के साथ साथ तह़िय्यतुल वुज़ू, इशराक़ व चाश्त, अव्वाबीन और सलातुत्तौबा बा क़ाइ़-दगी से पढ़ने लगे नीज़ नफ़्ली रोज़े और श-जरा शरीफ़ के अवरादो वज़ाइफ़ और दुरूद शरीफ़ पढ़ने का भी मा'मूल बन गया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़िक्रे आख़िरत से मु-तअ़ल्लिक़ रसाइल म-सलन **"क़ियामत का इम्तिह़ान, मुर्दे के सदमे, क़ब्र की पहली रात, बादशाहों की हड्डियां"** निहायत ही एहतिमाम के साथ सुनते और गिर्या व ज़ारी करते हुए अपने ईमान की सलामती की दुआ़एं मांगते थे। रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से इसी कैफ़िय्यत में उन के निहायत ख़ुश गवार दिन गुज़रते रहे। **र-मज़ानुल मुबारक सि. 1428 हि.** का बा ब-र-कत महीना अपने दामन में बे पायां रह़मतें और ब-र-कतें लिये हमारे दरमियान आ पहुंचा। **र-मज़ानुल मुबारक** से पहले रजब और शा'बान के रोज़े भी दादाजान ने हमारे साथ रखे और इस मुबारक माह के रोज़े भी बा क़ाइ़-दगी से रखते रहे। इस दौरान

अक्सर वोह हम से पूछते कि क्या जो र-मज़ान में फ़ौत होता है वोह सीधा जन्नत में जाता है ? 26 **र-मज़ानुल मुबारक** को अ़स्र की नमाज़ पढ़ी और लैट गए, उस दिन वोह बिल्कुल तन्दुरुस्त थे और उन को किसी क़िस्म की बीमारी नहीं थी । अचानक उठ कर बैठ गए और एक दम उन की त़बीअ़त ख़राब हो गई हम भाग कर उन के पास गए उन्हें सहारा दे कर सीधा लिटा दिया, उस वक़्त उन का जिस्म बिल्कुल सख़्त और ठन्डा हो चुका था । येह देख कर सब बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ पढ़ने लगे । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम 5 या 6 मिनट बा'द उन्हों ने झुरझुरी ली और उठ कर बैठ गए। उन का जिस्म पहले की त़रह़ नर्म हो गया, हम उन्हें दबाने लगे तो कहा मेरा जिस्म बिल्कुल ठीक है, दर्द नहीं कर रहा बस मेरा दिल घबरा रहा है । मुसल्सल येही कहे जा रहे थे कि मेरा दिल घबरा रहा है। हम ने कहा दादा जी ! आप रोज़ा तोड़ दें (क्यूं कि हम उन की ह़ालत देख चुके थे) लेकिन वोह कहने लगे नहीं नहीं मैं रोज़ा नहीं तोड़ूंगा । ख़ैर थोड़ी देर बा'द इफ़्त़ार का वक़्त भी हो गया, फिर उन्हों ने रोज़ा खोला, पानी पिया और थोड़ा सा फल भी खाया इस के बा'द फिर लैट गए इसी दौरान उन की ह़ालत मज़ीद ख़राब हो गई और मग़रिब के तीन फ़र्ज़ लैटे लैटे ही अदा किये । हम सब इस बात पर ह़ैरान थे कि इतनी ख़राब ह़ालत के बा वुजूद वोह हर आने वाले को पहचान लेते और उस की बात भी सुन लेते थे । इस दौरान

उन की ज़बान से कोई फ़ुज़ूल शिक्वा व शिकायत की बात न निकली बल्कि बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ पढ़ते रहे, उन के साथ सब घर वाले भी मुसल्सल बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ पढ़ रहे थे। **हमारे दादाजान ने एक मरतबा नहीं बल्कि कई मरतबा बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه पढ़ा और इसी तरह़ कलिमा पढ़ते पढ़ते इशा की अज़ान से कुछ देर पहले इस दारे ना पाएदार से हमेशा के लिये आंखें मूंद लीं।** जो भी उन की क़ाबिले रश्क मौत के मु-तअ़ल्लिक़ सुनता अ़श अ़श कर उठता, अगले दिन 27 र-मज़ानुल मुबारक को बा'दे नमाज़े ज़ोहर दादाजान की तक्फ़ीन व तदफ़ीन की गई, ह़स्बे वसिय्यत सर पर इमामा शरीफ़ भी सजाया गया, श-जरा शरीफ़, अ़ह्द नामा, नक़्शे ना'ले पाक वग़ैरा तबर्रुकात उन की क़ब्र में रखे गए। उन की तदफ़ीन के अगले रोज़ ही उन के पोते ने जो कि उस वक़्त ए'तिकाफ़ में मौजूद थे ख़्वाब में दादाजान को निहायत अच्छी ह़ालत में देखा इस के इलावा मेरी बड़ी बहन (या'नी उन की पोती) को भी कई मरतबा ख़्वाब में सफ़ेद कपड़ों में मल्बूस, रोशन चेहरे व दाढ़ी के साथ नज़र आए, घर के कई दूसरे अफ़राद ने भी मु-तअ़द्दद बार उन को निहायत अच्छी ह़ालत में देखा।

अदा हो शुक्र तेरा किस ज़बां से मालिको मौला
कि तूने हाथ में दामन दिया अ़त्तार का या रब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ वक़्ते विसाल कलिमा शरीफ़ नसीब हो गया

ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के अ़लाक़े लत़ीफ़आबाद के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के ह़लफ़िया बयान का ख़ुलासा है : मेरी ताई की रीढ़ की हड्डी ख़राब हो चुकी थी जिस की वजह से वोह सख़्त बीमार थीं । हम ने उन्हें जामशोरू शहर के मश्हूर अस्पताल में दाख़िल करवाया था। वहां उन का काफ़ी अ़र्सा इ़लाज जारी रहा मगर कोई इफ़ाक़ा न हुवा क्यूं कि मरज़ बहुत ज़ियादा बिगड़ चुका था, डॉक्टरों ने जवाब दे दिया तो हम उन्हें घर ले आए घर पहुंच कर हम ने दवाओं के साथ साथ ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्ते से प्लेटों का कोर्स भी करवाया। इस की ब-र-कत से त़बीअ़त में काफ़ी बेहतरी आ गई ख़ुश क़िस्मती से इस दौरान वोह शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद भी हो गईं मगर शायद उन की ज़िन्दगी के दिन पूरे हो चुके थे और चन्द माह बा'द कलिमए त़य्यिबा पढ़ते हुए उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। (اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن) उन के इन्तिक़ाल के बा'द उन के रिश्तेदारों में से किसी ने उन्हें ख़्वाब में क़ुरआने पाक की तिलावत करते हुए देखा नीज़ जब हम उन के चेहलुम वाले

दिन फ़ातिहा ख़्वानी के लिये क़ब्रिस्तान गए तो हैरत अंगेज़ तौर पर उन की क़ब्र पर डाले गए फूलों से ना'ले पाक का नक़्श बना हुवा था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से मुरीद होना काम आ गया और न सिर्फ़ मरते वक़्त उन्हें कलिमा शरीफ़ नसीब हुवा बल्कि मरने के बा'द उन्हें अच्छी हालत में भी देखा गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

निस्बत रंग ले आई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन बहारों को पढ़ कर ऐसा लगता है कि वक़्ते मौत कलिमए त़य्यिबा पढ़ने वाले इन ख़ुश नसीबों को **दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल और ज़माने के वलिय्ये कामिल अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **के दामन से निस्बत रंग ले आई** और इन्हें आख़िरी वक़्त कलिमा नसीब हो गया।

मरते वक़्त कलिमए त़य्यिबा पढ़ने की फ़ज़ीलत

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ख़ुश क़िस्मत है वोह मुसल्मान जिसे मरते वक़्त कलिमए त़य्यिबा पढ़ने की सआ़दत नसीब हो जाए, चुनान्चे **अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल**

उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है :

مَنْ كَانَ اٰخِرُ كَلَامِهٖ لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ **तरजमा :** जिस का आख़िरी कलाम لَآاِلٰـهَ اِلَّااللّٰـه (**कलिमए त़य्यिबा**) हो, वोह जन्नत में दाख़िल होगा।

(سُنَن ابوداؤد ج۳ ص۲۵۵ حدیث۳۱۱٦)

﴾3﴿ वक़्ते आख़िर अवराद की तक्रार

चक्वाल (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : मेरे तायाजान ह़ाजी मुह़म्मद नसीम अ़त्त़ारी जिन्हों ने मेरी परवरिश की अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बे इन्तिहा मह़ब्बत करते थे। और मदीनए मुनव्वरह (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) से उन की मह़ब्बत का तो येह आ़लम था कि उन्हों ने अपनी मुला-ज़मत के इख़्तिताम पर मिलने वाली तमाम रक़म सफ़रे ह़ज व ज़ियारते मदीना में ख़र्च कर दी। जब मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हुवा तो मेरे सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ देख कर बहुत ख़ुश होते और कहते कि आप को देख कर तो मदीने की याद आ जाती है। फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स सुनते तो बे इख़्तियार रोने लगते। इन्तिक़ाल से एक हफ़्ता पहले मस्जिद में नमाज़ियों से कहने लगे कि **"हो सकता है अगले हफ़्ते मुलाक़ात न हो।"** ज़िन्दगी के आख़िरी तीन दिन मैं ने उन्हें तीन विर्द कसरत से करते देखा (1) इस्तिग़्फ़ार (2) कलिमा

शरीफ़ (3) الصلوٰۃ والسّلام علیک یارسولَ اللّٰہ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم । उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी रात मुझे जगाया और कहा कि वुज़ू कर के आओ और मुझे **सूरए यासीन** सुनाओ, मैं ने हुक्म की ता'मील की, **सूरए यासीन** सुन कर फ़रमाने लगे मुझे बहुत सुकून ह़ासिल हुवा है। 17 र-मज़ानुल मुबारक सि. 1426 हि. ब मुत़ाबिक़ नवम्बर सि. 2005 ई. को मैं ने एक जगह काम से जाना था। मैं ने इजाज़त मांगी तो फ़रमाने लगे मत जाओ शायद फिर वापस आना पड़े, जब सुब्ह़ हुई तो उन की आंखें छत पर टिकी हुई थीं और पूरा जिस्म यहां तक कि बिस्तर भी पसीने से तर बतर था। पांच मिनट तक उन पर बेहोशी त़ारी रही फिर होश में आए और कहने लगे : **''वक़्त बहुत कम है।''** हम ने सोचा कि त़बीअ़त ज़ियादा ख़राब है शायद इस लिये ऐसी बातें कर रहे हैं लिहाज़ा हम उन्हें फ़ौरन अस्पताल ले गए, वहां पहुंच कर उन्हों ने अस्पताल में मौजूद लोगों को इकठ्ठा कर लिया और उन्हें कहा कि तुम भी कलिमा पढ़ो मैं भी पढ़ता हूं। कुछ लोगों ने मज़ाक़ उड़ाना शुरूअ़ कर दिया कि बाबा जी मरने का कह रहे हैं लेकिन लगता नहीं कि येह मरेंगे, इस के बा'द तायाजान ने येह अल्फ़ाज़ कहे **''या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **एक बार फिर मदीने ले जा।''** और फिर कलिमा शरीफ़ और दुरूदो सलाम पढ़ते हुए उन्हों ने अपनी जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द कर दी (اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن) कुछ दिनों बा'द मुझ गुनाहगार व बदकार को ख़्वाब में प्यारे आक़ा

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत नसीब हुई, आप के साथ मैं ने अपने तायाजान को भी देखा वोह फ़रमा रहे थे कि ह़ाजी मुश्ताक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّزَّاق भी यहीं तशरीफ़ फ़रमा होते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ बा'दे विसाल चेहरे पर मुस्कराहट

मर्कज़ुल औलिया लाहोर (पंजाब, पाकिस्तान) के मुह़म्मद नासिर अ़त्तारी तक़रीबन 15 बरस तक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहे। वोह कसरत से म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करते और जब से म-दनी इन्आ़मात की तरकीब बनी तो हर माह म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाते रहे और आहिस्ता आहिस्ता अपना अ़मल बढ़ाते चले गए। घर वालों की त़रफ़ से कुछ मुश्किलात का सामना भी करना पड़ा मगर उन की इस्तिक़ामत मिसाली थी तक़रीबन सि. 1423 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2002 ई. में अचानक उन्हें T.B का मरज़ लाह़िक़ हो गया कुछ अ़र्से तक दवाएं इस्ति'माल करते रहे जिस से मरज़ में कुछ इफ़ाक़ा हुवा मगर सात साल बा'द सि. 1430 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2009 ई. में फिर इस मरज़ में शिद्दत आ गई। टेस्ट करवाए तो डॉक्टरों ने कहा कि इन के गुर्दे भी फ़ेल हो चुके हैं अल ग़रज़ जूं जूं दवा की मरज़

बढ़ता ही गया। इस दौरान वोह मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक मश्हूर अस्पताल में दाख़िल रहे और इस ह़ालत में भी उन्हों ने कभी नमाज़ क़ज़ा न होने दी। कुछ अ़र्से के बा'द डॉक्टरों ने कहा कि इन्हें दूसरे अस्पताल में ले जाएं चुनान्चे हम उन्हें दूसरे अस्पताल ले गए जहां वोह तक़्रीबन चार दिन दाख़िल रहे पांचवें दिन सुब्ह़ फ़ज्र की नमाज़ के लिये उठे तो वालिदा साह़िबा ने उन्हें वुज़ू करवाया तो उन्हों ने नमाज़ अदा की। **इस के बा'द अल्लाह अल्लाह का ज़िक्र शुरूअ़ कर दिया।** इस दौरान अ़लाक़े के दूसरे इस्लामी भाई भी पहुंच गए, उन इस्लामी भाइयों ने ह़लफ़िया बयान देते हुए कहा **''वक़्ते नज़अ़ मुह़म्मद नासिर अ़त्तारी मुस्करा रहे थे''** और ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करते हुए उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। (اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن) मर्ह़ूम को दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों ने ग़ुस्ल दिया और एक म-दनी इस्लामी भाई ने उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (दा'वते इस्लामी के जामिअ़ातुल मदीना से फ़ारिग़ुत्तह़सील इस्लामी भाइयों को अल म-दनी कहा जाता है) सेंकड़ों इस्लामी भाइयों ने उन की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत की। एक इस्लामी भाई का बयान है कि में ने सात साल मुह़म्मद नासिर अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى के साथ गुज़ारे वोह फ़राइज़ व वाजिबात के साथ साथ नवाफ़िल कसरत से पढ़ते बिल ख़ुसूस नमाज़े अव्वाबीन तो बा क़ाइ़-दगी से अदा करते थे। सख़्त सर्दी की रातों में भी वोह

नमाज़े फ़ज्र के लिये सदाए मदीना लगाते थे। उन की क़ाबिले रश्क वफ़ात को देख कर कई इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो रहे हैं और उन के एक भाई ने भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने की निय्यत की है اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब तो उन के वालिद साहिब भी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र इख़्तियार फ़रमाते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ बा'दे इन्तिक़ाल चेहरे पर नूर की बरसात

सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद, पंजाब) के एक नवाही अ़लाक़े में मुक़ीम एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई की ईमान अफ़रोज़ वफ़ात के अह़वाल कुछ यूं बयान फ़रमाते हैं : हमारे अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद फ़य्याज़ अ़त्तारी दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता थे और बहुत अच्छे मुबल्लिग़ भी थे, तक़रीबन 6 साल तक बिस्तरे अ़लालत पर रहने के बा'द जहाने फ़ानी से रुख़्सत हो गए। शुरूअ़ में लगातार तीन माह तक उन्हें खांसी रही और इस के बा'द त़बीअ़त बहुत ज़ियादा बिगड़ने लगी। डॉक्टरों के मुत़ाबिक़ उन्हें इन्तिहाई ख़त़रनाक मरज़ था,

चूंकि उन के भाई फ़ौज में मुलाज़िम थे इस लिये आर्मी और एरफ़ोर्स के मुख़्तलिफ़ अस्पतालों में उन का इलाज होता रहा मगर शिफ़ा उन के मुक़द्दर में न थी। आख़िरी वक़्त उन्हों ने लम्बी लम्बी सांसें लेना शुरूअ़ कर दीं हम उन के पास बैठ कर **सूरए यासीन** शरीफ़ की तिलावत करने लगे एक इस्लामी भाई ने उन्हें आबे ज़मज़म भी पिलाया। चन्द लम्हों बा'द उन की रूह क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। (اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن) **इन्तिक़ाल के बा'द उन का चेहरा रोशन हो चुका था और नूर से जगमगा रहा था,** काफ़ी देर उन की मय्यित पर इस्लामी भाइयों ने ना'त ख़्वानी की और फिर उन्हें इ़मामा शरीफ़ के साथ दफ़्नाया गया। फ़य्याज़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْبَارِی की ईमान अफ़रोज़ वफ़ात के बा'द उन के भाइयों ने हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की निय्यत की नीज़ उन के एक भाई ने दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करने की भी निय्यत कर ली।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿6﴾ वोह मुझे लेने के लिये आ गए हैं

मर्कज़ुल औलिया लाहोर (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे

वालिद साहिब के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने की वजह से हमारा पूरा घराना दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया। मेरे दादाजान जो कि हमारे साथ ही रहते थे उन्हें सांस की बीमारी थी और येह बीमारी बहुत ज़ियादा बढ़ चुकी थी, बिल आख़िर एक रोज़ अचानक उन का सांस बन्द हो गया हम येही समझे कि वोह हमें दागे़ मुफ़ा-रक़त दे गए मगर जब अब्बू ने कलिमा शरीफ़ पढ़ा तो वोह भी कलिमा पढ़ने लगे, अब्बू ने दोबारा कलिमा शरीफ़ पढ़ा तो उन्हों ने दूसरी बार भी कलिमा पढ़ा और कहा कि वोह मुझे लेने के लिये आ गए हैं। पूछा गया कि कौन लेने आ गए? मगर उन्हों ने कोई जवाब न दिया क्यूं कि जो लेने आए थे उन्हें ले कर जा चुके थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे दादाजान म-दनी माहोल से वाबस्ता थे और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से त़ालिब भी थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾7﴿ नज़्अ़ के वक़्त कलिमए त़य्यिबा

मुज़फ़्फ़र गढ़ (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : मेरे वालिदे मर्ह़ूम ग़ुलाम फ़रीद अ़त़्त़ारी इन्तिक़ाल से कुछ अ़र्से पहले दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से यूं वाबस्ता हुए कि मैं तीन दिन के म-दनी

क़ाफ़िले में सफ़र करने के बा'द घर आया तो मैं ने वालिदे मोह़तरम को म-दनी क़ाफ़िले की बहारें बयान करते हुए उन्हें म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की तरग़ीब दिलाई । जिस के नतीजे में वालिदे मोह़तरम हाथों हाथ तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार हो गए, और यूं अगले ही दिन वालिदे मोह़तरम आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए । जब वोह क़ाफ़िले से वापस आए तो म-दनी क़ाफ़िले की बहारें उन में अ़-मली तौ़र पर नज़र आ रही थीं नमाज़ों की पाबन्दी करने लगे और अक्सर अवक़ात तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल रहते । एक रोज़ अचानक उन्हें पेशाब का आ़रिज़ा लाह़िक़ हुवा उन्हों ने डॉक्टर से दवा ली और ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या भी इस्ति'माल किये जिस की ब-र-कत से उन्हें इफ़ाक़ा हुवा । फिर कुछ दिनों के बा'द उन्हें सांस की बीमारी ने आ घेरा, एक रात अचानक उन का सांस बन्द होने लगा हम फ़ौरन उन्हें अस्पताल ले गए । डॉक्टरों ने चेकअप किया और दवाएं दीं जिस से त़बीअ़त काफ़ी ह़द तक संभल गई, हम उन्हें घर वापस ले आए । घर पहुंच कर हम काफ़ी देर तक वालिद साह़िब के साथ बातें करते रहे, उन की त़बीअ़त उस वक़्त बहुत बेहतर हो चुकी थी और वोह बहुत ख़ुश थे । कुछ देर के बा'द उन्हों ने मुझे कहा : "अब जा कर सो जाओ" उन के हुक्म की ता'मील करते हुए अभी मैं अपने कमरे में

पहुंचा ही था कि उन्हों ने मुझे बुलन्द आवाज़ से पुकारा, मैं फ़ौरन उन के पास पहुंचा तो उन्हों ने मुझे फ़रमाया कि मुझे पानी पर दम कर के दो और मेरे जिस्म पर भी दम कर दो ! मैं ने दम किया तो उन की तबीअ़त दोबारा बेहतर हो गई । फिर मुझ से फ़रमाया : अब आप जा कर सो जाओ ! अभी मैं सोने ही वाला था कि फिर मुझे आवाज़ दी और कहने लगे पानी पर दम कर के दो ! इसी त़रह़ तीन बार हुवा । तीसरी बार मैं दम करने के लिये पानी भर ही रहा था कि उन्हों ने बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ لَا اِلٰـــهَ اِلَّا اللّٰـــهُ مُحَـمَّـدٌ رَّسُوْلُ الله पढ़ा और उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई (اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वालिदे मोह़तरम को मरने से क़ब्ल ही दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया, शायद इसी म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से नज़्अ़ के वक़्त उन्हें कलिमा शरीफ़ नसीब हुवा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की मग़िफ़रत फ़रमाए । आमीन

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे

दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल की ब-रकात के क्या कहने । इस म-दनी माह़ोल से वाबस्तगान को वक़्ते नज़्अ़ और बा'दे वफ़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ऐसे इन्आ़मो इक्राम

से नवाज़ा जाता है कि देखने वाला उन की क़िस्मत पर रश्क करने लगता है। चुनान्चे गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा) के अ़लाक़े न्यू सेटेलाइट टाउन की एक इस्लामी बहन की म-दनी बहार पेशे ख़िदमत है जो इसी मज़्मून की अ़क्कासी करती है।

एक इस्लामी बहन जो कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थीं और अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़काम की बजा आ-वरी में बसर करतीं, सौमो सलात की पाबन्द और दूसरों को भी इन फ़राइज़ पर अ़मल की दा'वत देतीं, मां बाप के साथ निहायत अ-दबो एह़तिराम से पेश आतीं और छोटों पर बहुत शफ़्क़त करतीं। इ़लावा अज़ीं दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के ह़वाले से बहुत फ़अ़्आ़ल थीं। न सिर्फ़ ख़ुद इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करतीं बल्कि घर घर जा कर इस्लामी बहनों पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में अपने साथ ले जातीं। अल ग़रज़ उन के अख़्लाक़ व किरदार से अहले ख़ाना व दीगर रिश्तेदार बहुत मु-तअस्सिर थे और उन की ख़ूबियां बयान करते न थकते थे। अचानक बीमार हो गईं और बीमारी इतनी त़ूल पकड़ गई कि उन्हें अस्पताल में दाख़िल करवाना पड़ा। तक़रीबन 15 दिन इसी कर्बो अलम में गुज़र गए और इ़लाज के बा वुजूद त़बीअ़त में बेहतरी न आई। अपनी ना गुफ़्ता बेह ह़ालत देख कर

उन्हों ने अपने घर के तमाम अफ़राद से माज़ी की ह़क़ त-लफ़ियों की मुआ़फ़ी मांगी और अपनी वालिदा से क़ुरआने पाक की तिलावत करने को कहा । क़ुरआने पाक की तिलावत सुनने के बा'द तक़रीबन दस से पन्दरह मिनट तक ब आवाज़े बुलन्द कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه का इस त़रह़ विर्द करती रहीं कि हर सुनने वाले का दिल चाह रहा था कि काश ! येह ब-र-कतें मुझे भी नसीब हो जाएं । कलिमए त़य्यिबा के विर्द के बा'द मुसल्सल उन की ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ जारी रहे **''या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे''** अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात में वोह इस्लामी बहन ऐसी पुर सुकून ह़ालत में गुफ़्त-गू कर रही थीं जैसे उन्हें कोई तक्लीफ़ ही नहीं है । डॉक्टर्ज़ के कहने पर अहले ख़ाना ने उन्हें आराम करने के लिये अकेला छोड़ दिया और न जाने रात किस पहर वोह दाइ़ये अजल को लब्बैक कहते हुए अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिलीं । उन के ग़ुस्ल और तज्हीज़ व तक्फ़ीन का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा तो उन का चेहरा इतना मुनव्वर हो गया कि देखने वालों की नज़र न टिक्ती थी । यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारों को दारैन की फ़लाह़ अ़त़ा फ़रमा कर दूसरों के लिये मश्अ़ले राहे आख़िरत बना देता है । हर ज़बान महवे दुआ़ थी कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें अपने जवारे रह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमा । बिल आख़िर ज़िक्रो दुरूद से गूंजती फ़ज़ाओं में उन्हें सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《9》 आख़िरी कलाम कलिमा और दुरूदो सलाम

मर्कज़ुल औलिया लाहोर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : मेरे दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में आने की वजह इस्लामी भाइयों की पुर ख़ुलूस इन्फ़िरादी कोशिश थी, मेरे म-दनी माह़ोल में आने की वजह से आहिस्ता आहिस्ता घर में म-दनी माह़ोल बनता चला गया। मेरी वालिदए मोह़्तरमा भी दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हो गईं और इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आने जाने लगीं। नीज़ वोह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या में भी दाख़िल हो गईं। उन्ही दिनों अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "**चल मदीना**" के क़ाफ़िले के हमराह मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) एरपोर्ट से सूए मक्कए मुकर्रमा व मदीनए मुनव्वरह रवाना होने वाले थे। चुनान्चे वालिदए मोह़्तरमा के कहने पर मैं "चल मदीना" के क़ाफ़िले के साथ लाहोर एरपोर्ट तक गया। वहां पहुंचा तो इत्तिलाअ़ मौसूल हुई कि वालिदा साहिबा को हार्ट अटेक हो गया है और वोह एमरजन्सी वॉर्ड में दाख़िल हैं अचानक ऐसी कर्ब-नाक ख़बर सुन

कर **मेरे पैरों तले ज़मीन निकल गई ।** मैं फ़ौरन अस्पताल पहुंचा, वालिदा साहिबा के पास आया, उन की पेशानी को बोसा दिया और उन के पास बैठ गया, अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि मेरी प्यारी वालिदा बुलन्द आवाज़ के साथ कलिमए तय्यिबा لَااِلٰـهَ اِلَّااللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه और दुरूदो सलाम पढ़ने लगीं और इसी हालत में उन की रूह क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई । اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْن

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾10﴿ दा'वते इस्लामी को कभी न छोड़ना

ओकाड़ा (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : मेरे बड़े भाई नसीर अहमद अ़त्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْبَارِی तक़रीबन सि. 1415 हि. ब मुताबिक़ सि. 1994 ई. में दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए। वोह ड्राइविंग के पेशे से मुन्सलिक थे म-दनी माहोल का ऐसा रंग चढ़ा कि हर वक़्त सर पर सब्ज़ इमामे का ताज सजाए रखते और सफ़ेद लिबास में मल्बूस रहते, उन की ज़िन्दगी में आने वाले म-दनी इन्क़िलाब को देख कर ओकाड़ा अड्डे वाले हैरान रह गए। **इसी म-दनी हुल्ये में गाड़ी चलाते, मुसाफ़िरों को रसाइल तक़्सीम करते और गाड़ी में अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه **के इस्लाही बयानात पर मुश्तमिल केसिटें भी चलाते ।** उन की इन्फ़िरादी कोशिश से मैं भी म-दनी माहोल से मुन्सलिक हो गया वोह म-दनी

कामों में मेरी भरपूर ख़ैर ख़्वाही करते बल्कि दूर दराज़ म-दनी काम करने के लिये उन्हों ने मुझे मोटर साइकिल भी तोहफ़तन दी। **वोह कहा करते थे कि आप ख़ूब ख़ूब दा'वते इस्लामी के म-दनी काम करें आप के और आप के घर वालों के तमाम अख़राजात मैं अपने ज़िम्मे लेता हूं** लिहाज़ा मैं ने अपने आप को म-दनी कामों के लिये वक़्फ़ कर दिया, येह उन्ही की शफ़क़तों का नतीजा है कि मैं इस वक़्त दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ एक सूबे की मुशा-वरत का ख़ादिम (निगरान) हूं। सि. 1423 हि. ब मुताबिक़ सि. 2002 ई. में एक ह़ादिसे के दौरान गाड़ी उलट जाने के सबब वोह शदीद ज़ख़्मी हो गए, उन्हें जिन्नाह़ अस्पताल लाहोर ले जाया गया। तक़रीबन 14 दिन अस्पताल में ज़ेरे इलाज रहे। वफ़ात से एक दिन क़ब्ल बड़े वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में कहने लगे : **''हम दो भाई थे लेकिन अब सिर्फ़ एक रह जाएगा और याद रखो दा'वते इस्लामी को कभी न छोड़ना।''** इस के बा'द बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه का विर्द करने लगे जिस से पूरा वॉर्ड गूंजने लगा, फिर आबे ज़मज़म शरीफ़ नोश फ़रमाया और सब को अल वदाई अन्दाज़ में सलाम फ़रमाया और मुस्कराते हुए दाइये अजल को लब्बैक कहा और हमें दागे़ मुफ़ा-रक़त दे कर इस फ़ानी दुन्या से रुख़्सत हो गए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी

मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ मरने से पहले रिश्तेदारों से मुआ़फ़ी

मदीनतुल औलिया मुलतान (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : हमारी एक अ़ज़ीज़ा थीं, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहो़ल से वाबस्ता होने से **पहले उन की त़बीअ़त में अ़जीब सा चिड़चिड़ा पन था, बात बात पर ग़ुस्से में आ जाना और बुरा भला कहना उन की आ़दत बन चुकी थी ।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के घर में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत शुरूअ़ हुवा जिस की ब-र-कत से उन की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब आ गया और उन की आ़दात यक्सर बदल गईं, उन की फ़ुज़ूल गोई की आ़दत बिल्कुल ख़त्म हो गई और हर वक़्त उन की ज़बान पर ज़िक्रो दुरूद जारी रहने लगा। ज़िन्दगी ने ज़ियादा देर वफ़ा न की और वोह कुछ ही अ़र्से बा'द अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिलीं । **वफ़ात से एक हफ़्ता क़ब्ल वोह अपने तमाम रिश्तेदारों के हां गईं और उन सब से माज़ी में हो जाने वाली ह़क़ त-लफ़ियों की मुआ़फ़ी मांगती रहीं ।** जुमुअ़तुल मुबारक के रोज़ नमाज़े मग़रिब अदा करने के बा'द ईसाले सवाब की निय्यत से नज़्रो नियाज़ का एहतिमाम किया। इस के बा'द अ़लाक़े की कुछ इस्लामी बहनों को घर बुलाया और उन से कहा कि मुझे

सूरए यासीन सुनाओ, **सूरए यासीन** सुन कर उन्हों ने बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ لَاۤاِلٰـهَ اِلَّااللّٰـهُ مُحَمَّـدٌرَّسُوْلُ اللّٰه पढ़ना शुरूअ़ कर दिया और कलिमा पढ़ते पढ़ते वोह दारे फ़ना से दारे बक़ा को कूच फ़रमा गईं। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ ज़िक्रुल्लाह की तकरार

ठट्टा (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : हमारे ख़ानदान की एक इस्लामी बहन को खुश क़िस्मती से दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया। **म-दनी माह़ोल से वाबस्ता क्या हुई उन की ज़िन्दगी में बहारें आ गईं सौमो सलात की पाबन्दी करने लगीं और सलातो सलाम को हर घड़ी अपना वज़ीफ़ा बना लिया।** इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में खुद भी शिर्कत करतीं और इस्लाह़े उम्मत के अ़ज़ीम जज़्बे के तह़त घर घर जा कर इन्फ़िरादी कोशिश कर के दूसरी इस्लामी बहनों को इज्तिमाअ़ की दा'वत देतीं। कुछ अ़र्सा बा'द अचानक वोह बीमार हो गईं कई जगह से इ़लाज करवाया मगर त़बीअ़त संभलने की बजाए मज़ीद बिगड़ती चली गई, बिल आख़िर उन की ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़े आ पहुंचे

और उन्हों ने बुलन्द आवाज़ से **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करना शुरूअ़ कर दिया थोड़ी देर बा'द कलिमा शरीफ़ لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه पढ़ा और उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ीम निस्बतें

मज़्कूरा बाला वाक़िआ़त में जिन इस्लामी भाइयों और बहनों की **कलिमए पाक** का विर्द करते हुए दुन्या से **क़ाबिले रश्क अन्दाज़ में रुख़्सती** का बयान है, उन खुश नसीबों में येह निस्बतें यक्सां देखी गईं कि येह तमाम इस्लामी बहनें और भाई......!

(1) अ़क़ीदए **तौह़ीद व रिसालत** के क़ाइल, (2) **नबिय्ये करीम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के गुलाम, (3) सह़ाबए किराम, **अहले बैत** और **औलियाए कामिलीन** के मुह़िब, (4) चारों अइम्मए इ़ज़ाम को मानने वाले और करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेशवा **सय्यिदुना इमामे आ'ज़म** अबू ह़नीफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के **मुक़ल्लिद** (या'नी ह़-नफ़ी) थे, (5) **मस्लके आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ الرَّحْمَة पर कारबन्द थे, (6) तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता

और ज़माने के वली शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **के मुरीद थे ।**

इन ख़ुश नसीबों में मज़ीद येह निस्बतें भी यक्सां देखी गईं कि येह तमाम इस्लामी बहनें और इस्लामी भाई.....! अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की म-दनी तरबिय्यत की ब-र-कत से ﴾1﴿ पंज वक़्ता **नमाज़ी** और दीगर फ़राइज़ व वाजिबात पर अ़मल का ज़ेह्न रखने वाले थे, ﴾2﴿ नेकियां कर के **नेकी की दा'वत** फैलाने और बुराइयों से बचने का ज़ेह्न रखने के साथ साथ बुराइयों से बचाने की कोशिश करने वाले, ﴾3﴿ **दुरूदो सलाम** महब्बत से पढ़ने वाले, ﴾4﴿ **फ़ातिहा नियाज़** बिल ख़ुसूस **ग्यारहवीं शरीफ़** और बारहवीं शरीफ़ का एहतिमाम करने वाले, ﴾5﴿ ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी में **जश्ने विलादत** की धूमें मचाने वाले, ﴾6﴿ चराग़ां और इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त करने वाले थे ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन तमाम मज़्कूरा **अ़क़ाइद** से मु-तअ़ल्लिक़ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** की रोशनी में ग़ौर फ़रमाएं :

जिस का आख़िर कलाम لَآ اِلٰــهَ اِلَّا اللّٰــهُ (या'नी **कलिमए त़य्यिबा**) हो, वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।

(سُنَن ابو داؤد ج ۳ ص ۲۵۵ حدیث ۳۱۱٦ دار احیاء التراث العربی بیروت)

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का

फ़रमाने जन्नत निशान पढ़ कर तो हर शख़्स का हुस्ने ज़न येही होना चाहिये कि मौत के वक़्त इन्तिहाई नाज़ुक और मुश्किल वक़्त में मज़्कूरा आ़शिक़ाने रसूल का **कलिमए त़य्यिबा** पढ़ना **इन आ़शिक़ाने रसूल के मज़्कूरा अ़क़ाइद के ऐ़न शरीअ़त के मुत़ाबिक़ होने की दलील है** और उम्मीद है कि **अल्लाह** व रसूल اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ عَزَّ وَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन से राज़ी होंगे और वोह दुन्या व आख़िरत में काम्याब होंगे।

हर ज़ी शुऊ़र और ग़ैर जानिब दार शख़्स येही कहेगा कि येह तो वोह ख़ुश नसीब हैं, जिन्हों ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दामन और **मस्लके ह़क़ अहले सुन्नत** की वोह बहारें पाईं कि इन्हें वक़्ते मौत **कलिमए त़य्यिबा** पढ़ने की सआ़दत मिली। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह ख़ुश नसीब क़ब्र, ह़श्र, मीज़ान और पुल सिरात़ पर भी हर जगह **अल्लाह** व रसूल عَزَّ وَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से काम्याब हो कर सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का मुज़्दए जां फ़िज़ा सुन कर जन्नतुल फ़िरदौस में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने की सआ़दत ह़ासिल कर लेंगे।

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीगर **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की केसिट सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इमामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को हैरत अंगेज़ तौर पर **सिह्हत** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्हूम को अच्छी ह़ालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़्हे पर वाक़िए़ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये **''शो'बए अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मद आबाद गुजरात''**

नाम मअ़ वल्दिय्यत :..... उ़म्र..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं..... ख़त़ मिलने का पता.....
फ़ोन नम्बर (मअ़ कोड) :..... ई मेइल एड्रेस .....
इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम :..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/ साल :..... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :..... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी.....

मुन्दरिजए बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फुलां फुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती, डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के **''ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त''** मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़्हे पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये ।**

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे लबीब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए़ शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुए तो शैखे़ त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो़ ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मद आबाद गुजरात''** के पते पर रवाना फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा।

(पता अंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। (2) एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें। (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।